Bal Bharati
PUBLIC SCHOOL
ROHINI

Volume VI(2022-23), October,Issue 5

संस्कृत-हिंदी दिवस

विश्व संस्कृत दिवसः
2022

विश्व संस्कृत दिवस

मंजू महारा
टी. जी. टी
संस्कृत

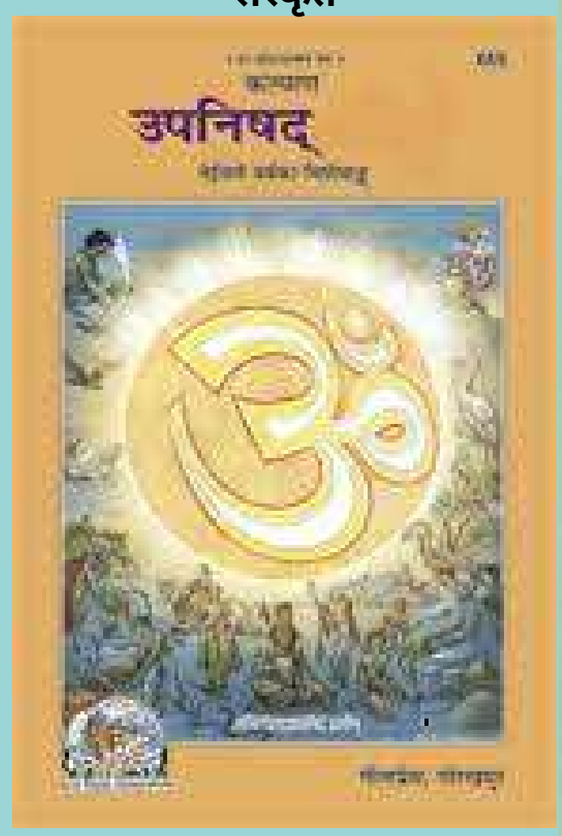

सस्ंकृत-भाषा सभी भारतीय भाषाओं एवं कुछ अतंर्राष्ट्रीय भाषाओं की जननी है, सर्वप्राचीन व सार्वकालिक है, देवों तथा ऋषि -मनुनियों की भाषा है। संस्कृत भारत के पास सबसे बड़ा खजाना है, यह हमारे देश का गौरव है, हमारे प्राचीन ग्रंथों की एक ऐसी भाषा है जहां सभी भावों को पूर्ण संक्षिप्तता के साथ व्यक्त किया जा सकता है और यह कंप्यटूर की भाषा भी है।

भारत के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक , आध्यात्मिक, दार्शनिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन एवं विकास के सोपानों की सपूंर्ण व्याख्या संस्कृत वाङ्मय में उपलब्ध है। देश-विदेश के कई बड़े विद्वानों व विशेषज्ञों ने वैज्ञानिक रीति से संस्कृत के अनपुम और विपलु साहित्य का अध्ययन किया और गहरी गवेषणा की है। समस्त भारतीय भाषाओं को जोड़ने वाली कड़ी यदि कोई भाषा है तो वह संस्कृत ही है।

"वयं भारतीया:। अस्माभि: स्वकीयं गौरवमयं वाङ्मयमधीत्यै व तदाधारे भविष्यनिर्माणं कर्तव्यं, तदैवात्मोत्कर्ष: सम्भाव्यते। स च उत्कर्ष: आत्माधिष्ठितो हृदयग्राही वास्तविकोन्नतिकारी भविष्यति। यानि राष्ट्राणि स्वगौरवंन न विस्मरन्ति तान्येव सफलतायाश्चरमोत्कर्ष प्राप्नुवन्ति ।"

हिंदी
दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
हिंदी भाषा नहीं भावों की अभिव्यक्ति है

हिंदी
दिवस

हिंदी
दिवस
14 सितंबर

हिंदी
दिवस
14 सितंबर 2022

हिंदी
दिवस
14 सितंबर

माया रानी कौशिक
टी. जी. टी.
हिंदी

हिंदी मात्र भाषा नहीं,मातृ भाषा है अर्थात जो स्थान हमारे जीवन में हमारी माँ का है ,वही स्थान हमारी मातृ भाषा हिंदी का भी है । देव भाषा संस्कृत की कोख से जन्म लेने के कारण हिंदी को संस्कृत की बड़ी बेटी माना जाता है । हिंदी भारत के जनमानस की भाषा है । कभी औपचारिक रूप से विद्यालय न गया हुआ व्यक्ति भीहिंदी भाषा में बड़ी सहजता से अपने विचार अभिव्यक्त कर सकता है । हिंदी के इसी व्यापक विस्तार क्षेत्र को देखते हुए ही सन 1918 में सर्वप्रथम महात्मा गाँधी ने हिंदी को राज भाषा का दर्जा प्रदान करने की मांग की। और गांधी जी की इसी मांग के आधार पर देश की आजादी के पश्चात 14 सितंबर, सन 1949 में हिंदी को भाषा का दर्जा दिया ग हिंदी भाषा हमारी राष्ट्रीय एकता की द्योतक है । पूर्व से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से ले कर दक्षिण तकसंपूर्ण देश को एकता के सूत्र में बांधने का यदि कोई भाषा दम -खम रखती है तो वह भाषा हिंदी ही है । स्वतंत्रता से पूर्व भी सभी देशवासियों को एकता के सूत्र में हिंदी भाषा ने ही पिरोया था । आज भी कोई जन आंदोलन हो या नारेबाजी हिंदी भाषा की ही तूती बोलती है । हिन्दी भाषा हमारी संस्कृति और सभ्यता की भी प्रतीक है । नमस्ते , आदरणीय ,पूजनीय ,वंदनीय श्रद्धेय ,प्रातः स्मरणीय आदि संबोधन शब्दों में हमारी संस्कृति झलकती है । हिंदी भाषा एक महा सागर है। इसमें समावेश की अद्भुत शक्ति है । अंग्रेजी ,उर्दू , फारसी पूर्तगाली तथा अनेक भाषाओं के शबदों को अपने ऐसे समेटे हुए है। इतनी ग्राह्य शक्ति संसार की किसी भाषा में देखने को नहीं मिलती । लचीलापन भी हिंदी भाषा की मुख्य विशेषता है । प्रयोग और व्यवहार के अनुसार भी हिंदी भाषा समय – समय पर अपना रूप बदलती रहती है । हिंदी भाषा के शब्दों की समृद्धि भी देखते बनती है । भाव के अनुसार शब्दों का प्रयोग केवल हिंदी भाषा में ही हो सकता है । पवित्रता के भाव के लिए हमारे पास जल शब्द है तो वहीं नाले में बहने वाले के लिए पानी । धरा ,भूमि ,अचला पृथ्वी चाहे पर्यायवाची शब्द हैं ,परंतु इनका प्रयोग क्रमश: धारण करने के अर्थ में धरा , अडिगता के अर्थ में अचला आदि शब्दों का प्रयोग हिंदी भाषा का सौन्दर्य है । हिंदी बहुत ही टेक्निकल भाषा है ,हिंदी में हम जैसा बोलते हैं ,वैसा ही लिखते हैं । अंग्रेजी भाषा की तरह इसमें किसी वर्ण का छिपाव नहीं है । इस इसी विशेषता के कारण गूगल और विककिपीड़िया जैसी वेबसाईटस ने भी इसके प्रचार ,प्रसार में कोई कोर -कसर नहीं छोड़ी है। अब तो इंटरनेट पर भी हिंदी भाषा अपना वर्चस्व स्थापित करती जा रही है । सोशल मीडिया पर तो हिंदी ने धूम मचा रखी है ।

नन्ही कलम से

हिंदी का परिचय

सुना रही हूँ , अपनी कहानी
अपनी व्यथा अपनी जुबानी
नमस्कार दोस्तों ! हिंदी है मेरा नाम
विचारों को अभिव्यक्त करना है मेरा काम |
विद्यार्थी इसे पढ़ने से कतराते हैं |
कठिन साहित्य इसका कारण बताते हैं |
हिंदी का तो नाम गए है वह भूल ,
चढ़ा दी है इस पर अंग्रेज़ी की धूल |
दुख होता है विद्यार्थियों से करके मुलाकात |
ना पूरी हिंदी ना पूरी अंग्रेज़ी में करते हैं वे बात |
मेरा अस्तित्व अब तुम्हें ही बचाना है |
भारत के कोने- कोने में हिंदी को स्वीकार कराना है ||

जीविशा
V-C

कह रही है धरा

अब एक बार सबसे कह रही है धरा,
फ़िर ख़ुद को किया हरा ,
मुझे सम्मान दो ,प्यार दो ,मुझे
चेह्चाने दो,
महामारी के बीच इस नए रूप में
झूमने दो ,
तुम हो तो मेरे बच्चे ही, तुम्हारी हर
गलती करती हूँ माफ़,
तुम्हे एक सबक देना ज़रुरी था,
इससे पहले मैं हो जाती हूँ साफ़ |

तिश्या शर्मा
XII-D

आसमान

नीला -नीला आसमान हूँ ,
अगर प्रदूषण ना फैलाओ।
रात में देखने हो चाँद -सितारे
तो
देख लो अगर, प्रदूषण ना
फैलाओ ।
पेड़ -पौधों को अगर न तुम
काटो,
तो उड़ते आसमान में भिन्न
-भिन्न पक्षियों को
देख तुम भी थोड़ा मुस्काओ।।

गर्वित शर्मा
III-E

भारत गाथा

आओ आओ मैं भारत की गाथा तुम्हें सुनाती हूँ,
नालंदा व विक्रमशिला की पावन धरा दिखाती हूँ।
जिसने बुद्ध व महावीर से दुनिया को सुप्रकाश दिया,
जिसने ज्ञानी आर्यभट्ट से दुनिया को आकाश दिया।
जो अशोक औ चंद्रगुप्त का कितना प्यारा तारा था,
पूरी दुनिया जीत चुका था, यहाँ सिकंदर हारा था।
जहाँ संत चाणक्य ने राष्ट्रवाद का पावन मंत्र दिया,
प्रथम राष्ट्रपति ने भारत को संविधान का यंत्र दिया।
यह भारत जो बोद्ध-जैन धर्मों की पावन धरती थी,
यह भारत जो विश्वामित्र जनक की पूजा करती थी।
यह दिनकर की धरती थी, दुश्मन पर गर्जन करती थी,
देशद्रोहियों की छाती का जमकर मर्दन करती थी।
जिस धरती से बापू ने सत्याग्रह का उदधोष किया,
कितने क्रांतिकारियों ने आज़ादी का जयघोष किया।
जहाँ जन्म लेकर सीता ने नारी का आदर्श दिया,
तिलक, सुभाष, भगत, बिस्मिल ने स्वाभिमान उत्कर्ष दिया।
यह धरती साहित्य कला संस्कृति की अदभुत वाहक है,
शांति- त्याग- तप- दया- सरलता की अनुपम संवाहक है।

निव्याक्षी भारद्वाज
XI-D

हमारी मातृभाषा

हिन्दी है हम सब की भाषा
हिन्दी हमारी मातृभाषा
हिन्दी को उसका मान दिलाएँ
आओ मिलकर हिन्दी दिवस मनाएँ
सबसे ज्यादा बोली जाती
सबसे ज्यादा समझी जाती
सबकी बोली सबकी भाषा
हिन्दी हमारी मातृभाषा
चलो मिलकर इसकी शान बढ़ाएँ
आओ मिलकर हिन्दी दिवस मनाएँ
याद दिलाएँ हिन्दी की परिभाषा
हिंदू हैं हम और हिन्दी हमारी भाषा
हिन्दी हमारी मातृभाषा
याद रखें ये और सबको याद दिलाएँ
आओ मिलकर हिन्दी दिवस मनाएँ
शान है हिंदी मान है हिंदी
जान है हिन्दी कहाँ है हिंदी
सबको हिन्दी की पहचान कराएँ
आओ मिलकर हिन्दी दिवस मनाएँ
छात्रा का नाम - दिविशा
कक्षा – IV-C

माँ की ममता, माँ का प्यार

माँ की ममता माँ का प्यार
झूठा है सारा संसार....
बगोद उठाती लोरी गाती
पहले खाना हमे खिलाती....
करती पल पल हमे दुलार
माँ की ममता माँ का प्यार.....
माँ की आंखो के तारे हम
घर के राज दुलारे हम.....
मीठे सुर मै रही पुकार
माँ की ममता माँ का प्यार....
दूर नही है रहने देती
आंशु नही है बहने देती....
करे खिलौनो की भरमार
माँ की ममता माँ का प्यार....
कौन है जग मै माँ के जैसा
सोना चाँदी रूपया पैसा....
उसके आगे सब बेकार
माँ की ममता माँ का प्यार....
बच्चे का नाम - डैलिशा खटयाल
कक्षा - II-C

महंगाई जी

मंहगाई जी, जब-जब तुम आती हो,
हम सबको बहुत सताती हो,
हमारी खून-पसीनेकी कमाई को,
तुम पल भर में उड़ा लेजाती हो।
तुम तो दन दोगुनी और दिन-रात चौगनी होकर,
मोटी-ताजी हो जाती हो,
हमको तुम परेशान कर,
हमारा सारा खून पी जाती हो।
मंहगाई थोड़ी मेरी बात तुम मान लो,
इतना इतराती हो,
अपनी सेहत का कुछ तो ख़याल करो,
तुम जन्म क्यूं ही जाती हो।
मोटी सूरत लेकर तुम,
जहाँदेखो जाती हो,
रोग लगाकर सबको अपना,
बस वहींजम जाती हो।
मंहगाई तुम कठोर दिल की हो,
तभी तो दिन-रात सताती हो,
हमारा पीछा छोड़कर,
जानेतुम क्यों नहीं जाती हो।
हनविका III-C

हिंदी का परिचय

सुना रही हूँ , अपनी कहानी
अपनी व्यथा अपनी जुबानी
नमस्कार दोस्तों ! हिंदी है मेरा नाम
विचारों को अभिव्यक्त करना है मेरा काम |
विद्यार्थी इसे पढ़ने से कतराते हैं |
कठिन साहित्य इसका कारण बताते हैं |
हिंदी का तो नाम गए है वह भूल ,
चढ़ा दी है इस पर अंग्रेज़ी की धूल |
दुख होता है विद्यार्थियों से करके मुलाकात |
ना पूरी हिंदी ना पूरी अंग्रेज़ी में करते हैं वे बात |
मेरा अस्तित्व अब तुम्हें ही बचाना है |
भारत के कोने- कोने में हिंदी को स्वीकार कराना है ||

जीविशा
V -C

प्रकृति तू है मेरी माँ

प्रकृति तू है मेरी माँ,
जीवन मुझको तूने दिया ।
भोजन हेतु मीठे फल,
पीने हेतु मीठा जल ।।
यह सब तूने मुझे दिया,
प्रकृति तू है मेरी माँ।।1।।
कितने सुंदर तेरे पर्वत,
कलकल बहती यह नदियां ।
झर झर गिरते यह निर्झर,
ताल बने कितने सुंदर ।।
कितनी सुंदर मेरी माँ,
प्रकृति तू है मेरी माँ।।2।।
वृक्ष घनी दे छाँव हमें,देते हमको वायु प्राण ।
खेतों की हरियाली उज्ज्वल,
देती हमको अन्न और धान।। कितनी महिमा
गाऊं तेरी,
प्रकृति तू है मेरी माँ।।3।।

ऋषिताअग्रवाल
IX-A

पेड़ से थोड़ी सी गप्पे

आप बुरे है और हरे भी, देते है हमको हवा भी और छाया भी,
फल, फूल और पक्षी आपके दोस्त
हालांकि आप बोल नहीं सकते लेकिन,
हम समझ जाते हैं,
कुछ लोग आपको धुल समझकर वहाँ पर मकान बनाते हैं फिर खुद ही.
पछताते हैं।
हम आपको दोस्त समझकर घंटो बात करते थे आप की गोद में सो जाते थे
मुझे आज भी याद हैं
मुझे आज-भी-याद है।

- प्रियांशी जैन
VII-E

ओ राही तू चलता चल

ओ पन्थी डग भरता चल
राह तेरी यह नहीं सरल
फिर भी आगे बढ़ता चल
कंटक भरा तेरा पथ है
बना हुआ बैरी जग है
पग पग पर बैठा ठग है
सोच समझ भरना डग है
बनकर अपना तू संबल
कठिनाई को तू कर हल
ओ राही तू चलता चल
ओ पन्थी डग भरता चल
आखेटक जग बना हुआ
अंधियारा है घना हुआ
समर हो जैसे ठना हुआ
जाल कोई ज्यों बुना हुआ
दृढ़ता से तू भर हर डग
साहस ही है तेरा हल
सब्र का होगा मीठा फल
जुगत लगा और खोज ले हल
माने सब तेरा कौशल
ओ राही तू चलता चल
ओ पन्थी डग भरता चल
यह जीवन एक बीहड़ वन
मत कर छोटा अपना मन
हैं परिस्थितियां बड़ी विषम
विपदाओं ने घोटा दम
मत कर व्याकुल अपना मन
भूल नहीं तू है सक्षम
ओ राही तू चलता चल
ओ पन्थी डग भरता चल
राह नहीं है सुगम सरल
फिर भी आगे बढ़ता चल

मानित चड्ढा
IX-D

लोरी

निदिया रे आजा अब तो
ले जा उस देश रे
मेरी छोटी सी प्यारी सी
नन्ही सी परी खुश हो जहां
जहां: हो चाकलेट टाफी
के बड़े बड़े रे
खिलौने ही खिलौने हो हर जगह
बिस्कुट पिज़्ज़ा का हो
अमबार जहां लगा
ले जा रे ले जा रे
सपनों के देश में ।

छनक गर्ग
VI - B

दान

जीवन में माता-पिता और
हर बड़े का सम्मान करो
खुश रहो, सबको खुश रखो तुम
हाथ खोलकर दान करो |
भूख से जान न जाए किसी की
थोड़ा सा अन्न-दान करो
काँपे न कोई सर्दी में
कुछ कपड़ों का दान करो |
बर्बाद करो न तुम भोजन को
पशुओं का भी ध्यान करो
गर्मियों में पक्षियों के लिए
कटोरे में जल-दान करो |
हँसो नहीं किसी अनपढ़ पर तुम
निरक्षर को अक्षर का दान करो
पुरानी किताबों को बेचो न कभी
बच्चों को पुस्तक दान करो |
खूब बढ़ेगा देश हमारा
आपस में सबका मान रखो
दूसरों को खुश रखने के लिए
कभी अपनी खुशियों का भी दान करो |

धृतिल नरूला
कक्षा - IV-B

ऋणी है हम उन जवानों के,

जो सरहदों पर अपना जीवन बिताते हैं,
कर्ज़ के नाम पर देखो यह वीर, मुस्कुराकर मौत को गले लगाते हैं।
हम मनाते दिवाली पटाखों संग होली पर रंग उड़ आते हैं,
कलेजा है हमारा वीरो का हर त्योहार गोले बारूद
के बीच मनाते हैं। मंदिर मस्जिद के नाम पर,
गए हम धर्मों में बैठे हैं।
ना दोहराना यह गलती सैनिकों के संग,
क्योंकि यह सिर्फ तिरंगे के आगे शीश झुकाते हैं

महत्व चावला IX A

"देश भक्ति गीत"

मेरा देश है सबसे प्यारा,
सारे जहां में सबसे न्यारा।
गौरवमई इतिहास वाला,
'सोने की चिड़िया' कहलाने वाला,
आओ इसकी शान बढ़ाएं,
तिरंगा इसका सबसे ऊंचा फहराएं।
मेरा देश है सबसे प्यारा,
सारे जहां में सबसे न्यारा।
भगत सिंह,सुखदेव,राजगुरु,
इस धरती मां के तारे हैं,
देश की रक्षा की खातिर,
अपने शीश वारे हैं।
मेरा देश है सबसे प्यारा,
सारे जहां में सबसे न्यारा।
आओ हम भी कुछ कर दिखाएं,
दुश्मनों को मजा चखाएं,
भारत को राज कराएं,
'विश्व गुरु'इसे बनाएं।
मेरा देश है सबसे प्यारा,
सारे जहां में सबसे न्यारा।

हिमाक्षी बाबा गोसाईं
VI-E

मेरी माँ

मेरी माँ है सबसे प्यारी,
भोली-भाली जग से न्यारी।
प्यार मुझे वो करती है,
पर गुस्सा भी करती है।

न पढ़ने पर मार भी देती,
बाद में चाहे खुद रो लेती।
ताकत भी भरपूर है उसमें,
आँच न मुझ पर आने देती ।

जान उसकी बसती मुझ में
इतना प्यार लुटाती मुझ पे।
ममता से भरपूर है सारी,
चाँद सितारों से भी प्यारी,
मेरी माँ है सबसे प्यारी,
भोली-भाली जग से न्यारी।।

सिदक सेठी
IV-C

स्कूल

वो कमीज़ के बटन ऊपर नीचे लगाना
अपने बाल खुद ना काढ़ पाना
ऐ मेरे स्कूल मुझे ज़रा फिर से तो बुलाना
वो बड़े नाखूनों को दांत से चबाना
ऐ मेरे स्कूल ज़रा मुझे फिर से तो बुलाना

देर होने पर मैदान के चक्कर लगाना
वो प्रार्थना के समय कक्षा में ही रुक जाना
ऐ मेरे स्कूल मुझे ज़रा फिर से तो बुलाना
पकडे जाने पर पेट दर्द का बहाना लगाना
दोस्तों का साथ देने को कक्षा के बाहर
जाने का बहाना लगाना
ऐ मेरे स्कूल ज़रा फिर से तो स्कूल बुलाना।

प्रिशा जैन
I-C

मेरी माँ

मेरी माँ है सबसे प्यारी,
भोली-भाली जग से न्यारी।
प्यार मुझे वो करती है,
पर गुस्सा भी करती है।
न पढ़ने पर मार भी देती,
बाद में चाहे खुद रो लेती।
ताकत भी भरपूर है उसमें,
आँच न मुझ पर आने देती।
जान उसकी बस्ती मुझ मैं,
इतना प्यार लुभाती मुझ पे।
ममता से भरपूर है सारी,
चाँद सितारों से भी प्यारी,
मेरी माँ है सबसे प्यारी,
भोली-भाली जग से न्यारी।।

सिदक सेठी
II-C

अभिभावको की कलम से

वीडियो गेम्स को घर पर छोड़

आओ लगाएं मैदानों में दौड़
क्यों टीवी , मोबाइल को देख देख
कर
लगाते हो अपने शरीर को जंग,
आओ मैदानों में आकर
देखो प्रकृति के अनूठे रंग।
इन उपकरणों को घर पर छोड़
जब हम मैदानों में आएँगे,
मिटटी से हम खेलेंगे और
अपनी मिटटी से जुड़ जाएँगे।
कला, शिक्षा में दिखाया हुनर
अब खेल जगत की बारी है,
दुनिया को बतलाना है
भारत सब पर भारी है।
नीरज, गगन, दीपिका, अभिनव
जैसे कई और खिलाडी उभर कर
आएंगे,
दुनिया के शिखर पर हम मिलकर
भारत का तिरंगा फहराएंगे।

अनुभा शर्मा
संयम शर्मा
VI-B

एक अनोखा सपना

आओ चलो एक सपना देखें।
सपना एक अनोखा देखें।
इस रंग बिरंगी दुनिया में
आओ चलें एक सपना देखें।
इस सपनों की दुनिया हो,
जिसमें हर कोई अपना हो
न धर्म के नाम पर दंगे हों ,
न जाति के नाम पर झगडे हों ,
न तेरा न मेरा हो बस हर कोई अपना हो।
आओ चलो इस सपने को
हम मिलकर साकार करें।
इस रंग बदलती दुनिया में ,
हम एक नया बदलाव करें।
आओ चलो एक सपना देखें ,
सपना एक अनोखा देखें,
इस रंग बिरंगी दुनिया में ,
आओ चलें एक सपना देखें।

स्वरचित : अनु कौशल
सुनिधि सिंह I-C

पहचान

मन का पंछी उड़ता जाये
रोके से भी फिर रुक न पाए
आज यहाँ कल वहाँ
जाने इसकी मंज़िल कहाँ
चलता जाये कुछ खोज न पाए
हासिल करना है क्या कुछ समझ न पाए
बैठ कर इक पल साँस लेले
खोज को अपनी कुछ विराम दे दे
ढूँढ रहा है तू शायद सुकून के साए
अरे पगले ढूँढने से भी वो मिल न पाए
तेरे अंदर ही है चैन का दरिया
देखने का बस बदलना है तुझे नज़रिया
अंतर्मुख हो ख़ुद से ख़ुद की पहचान आए
शायद तू अपने साथ दुनिया को भी बदल पाए

संगीता मेहरा
सायांश मेहरा
VII-E

करोना का टाइम बहुत सुहाना था

वो समय भी कितना सुहाना था ,
जिसका कोई न नया फसाना था।
कभी दादू के पेट पर
तो कभी दादी के साथ खेल
ही सहारा था।
कभी बेफिक्री की नींद
तो कभी भाई के साथ खेल
मस्ताना था।
सच कहूँ तोह वो दिन बड़े
हसीन थे
जब पापा के पास टाइम और
माँ के पास स्वादिष्ट खाना था।

द्वारा
राईना जैन
अभिवावक - ईधता जैन

हिंदी दिवस

हिंदी दिवस पर हिंदी में करके बात
गर्व से मुस्कुराते हैं हम,
शेष पूरे वर्ष फिर क्यों
अंग्रेजी को अपनाते हैं हम?
हिंदी हमारी मातृभाषा पराई-सी लगती है अब,
अंग्रेजी में बात करके सभ्य देखना चाहते हैं सब।
हिंदी देश में रहकर भी हम
पराई भाषा को दुलार रहे।
बच्चों को भी अंग्रेजी सिखाकर
हिंदी को दुत्कार रहे।
तो आओ, हिंदी को हर क्षेत्र में आगे बढ़ाकर इसका
सम्मान करें,
हम देश भक्त कहलाएँगे जब हिंदी में सब काम करें।
रचयिता का नाम - स्वाति गुप्ता (नविका गुप्ता)

"हिंदी से है हिंदुस्तान"

'हिंदी' है अपनी पहचान,
हिंदी से है हिंदुस्तान,
संस्कृत जननी भाषाओं की
हिंदी में संस्कृत की जान
हिंदी है तो होगा भारत,
हिंदी से है हिंदुस्तान।।1।।
भाषाएं सब देशों की ज्यों
बनतीं उन सब की पहचान
क्यों ना हम सब वासी मिलकर
करतेइसका भी परित्राण।
हिंदी हम सब की है भाषा
इससे है गौरव और मान
आओ हिंदी को अपनाएं
हिंदी से है हिंदुस्तान।।2।।
भाषा है अस्तित्व मनजु की
भाषा से है उसका मान
जो भाषा ना अपने राष्ट्र की
वह कैसे कर सकती त्राण ?
आओ हिंदी को अपनाएँ
हिंदी से है हिंदुस्तान ।।3।।
भाषा सबको योग्य बनाए
भाषा परिवर्तन ले आए
भाषा जननी संस्कारों की
भाषा देती अतुलित दान
हिंदी भाषा के गणु गाएँ
हिंदी हम सब की पहचान ।।4।।
प्रतिदिन अपना हिंदीमय हो
प्रतिदिन हिंदी की ही जय हो
"हिंदीं" हैं तो क्यों ना हिंदी
बन जाए 'अधरों का गान'
हिंदी ही अपना गौरव है
हिंदी है भारत की शान
आओ हिंदी को अपनाएँ
हिंदी से है हिंदुस्तान
हिंदी से है हिंदुस्तान।।5।।

—------ डॉ सीमा अग्निहोत्री चड्ढा "अदिति"

टी. जी. टी
संस्कृत

IX-D से लक्ष्य, रिधिमा और मानित द्वारा निर्मित